का दृष्टान्त है। एक देश में स्थित होते हुए भी सूर्य सम्पूर्ण ब्रह्माण्ड को प्रकाशित करता है। इसी भाँति, देह के हृदय-देश में स्थित अणु-आत्मा सिर से पैर तक इस सारे शरीर को चेतना से आलोकित करता है। अतएव चेतना आत्मा की उपस्थिति का प्रमाण है, उसी प्रकार जैसे सूर्यप्रभा से सूर्य का होना सिद्ध होता है। जब तक आत्मा देह में रहता है, तब तक सम्पूर्ण देह में चेतना व्याप्त रहती है; आत्मा के चले जाते ही तत्क्षण चेतना सर्वथा विलुप्त हो जाती है। कोई भी विवेकी पुरुष यह सुगमता से समझ सकता है। अतएव सिद्ध होता है कि चेतना जड़ प्राकृतिक तत्त्वों के समुच्चय से उत्पन्न नहीं हुई है; अपितु, वह तो आत्मा का स्वरूप-लक्षण है। परमात्मा की चेतना से चिद्गुणों में एक होने पर भी जीवात्मा की चेतना सर्वोपरि नहीं है। जीव व्यष्टि-चेतन है, अर्थात् उसकी चेतना किसी एक देह तक सीमित है, जबकि परमात्मा समष्टि-चेतन है—जीवात्मा के सखारूप में सब देहो में व्याप्त है। यह परम-चेतना और जीव-चेतना का अन्तर है।

क्षेत्रक्षेत्रज्ञयोरेवमन्तरं ज्ञानचक्षुषा।
भूतप्रकृतिमोक्षं च ये विदुर्यान्ति ते परम्।।३५।।

क्षेत्र=देह (शरीर); **क्षेत्रज्ञयोः**=देह के स्वामी के; **एवम्**=इस; **अन्तरम्**=भेद को; **ज्ञानचक्षुषा**=ज्ञानदृष्टि के द्वारा; **भूत**=जीव; **प्रकृति**=माया; **मोक्षम्**=मोक्ष को; **च**=तथा; **ये**=जो; **विदुः**=जानते हैं; **यान्ति**=प्राप्त होते हैं; **ते**=वे; **परम्**=परमगति को।

अनुवाद

इस प्रकार देह (क्षेत्र) और देही (क्षेत्रज्ञ) के भेद को तथा इस बन्धन से मुक्ति के साधन को जो पुरुष ज्ञानदृष्टि के द्वारा तत्त्व से जानते हैं, वे मेरे परमधाम को प्राप्त हो जाते हैं।।३५।।

तात्पर्य

तेरहवें अध्याय का सार क्षेत्र, जीव-क्षेत्र और परमात्मा-क्षेत्रज्ञ में भेद को जानना है। श्रद्धालु को चाहिए सब से पहले भगवत्कथा का श्रवण करने के लिए सत्संग करे। इस प्रकार वह शनैः-शनैः प्रबुद्ध हो जाएगा। सद्गुरु के आश्रय में उस विवेक की प्राप्ति होती है, जिसके द्वारा आत्मा और जड़ प्रकृति में भेद किया जा सकता है। यही भगवत्प्राप्ति का प्रथम चरण है। गुरुदेव शिष्यो को नाना प्रकार के उपदेशों द्वारा देहात्मबुद्धि से मुक्त होने की शिक्षा देते हैं। जैसे, भगवद्गीता में हम देखते हैं कि श्रीकृष्ण अर्जुन को सांसारिक चिन्ता से मुक्त करने के लिए उपदेश कर रहे हैं।

यह समझना कठिन नहीं है कि यह देह अचित् जड़ तत्त्व है। इसकी उत्पत्ति चौबीस स्थूल तत्त्वों से हुई है, जिनका विश्लेषण किया जा सकता है। देह स्थूल अभिव्यक्ति है, जबकि मन और उसके विकार सूक्ष्म अभिव्यक्ति हैं। जीवन के लक्षण इन्हीं तत्त्वों की अन्तर्क्रिया हैं। परन्तु इन सब के ऊपर आत्मा है और उसके ऊपर परमात्मा है। आत्मा और परमात्मा में निश्चित भेद है। यह प्राकृत-जगत् आत्मा और चौबीस प्राकृत तत्त्वों के योग से कार्य कर रहा है। जो पुरुष आत्मा और प्राकृत तत्त्वों